इस्लाम में ज्ञान का महत्व

[हिन्दी – **Hindi** – هندي]

शैख़ मुहम्मद बिन इब्राहीम अत्तुवैजरी

अनुवाद: **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2011 - 1433

IslamHouse.com

﴿ أهمية العلم في الإسلام ﴾

« باللغة الهندية »

الشيخ محمد بن إبراهيم التويجري

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2011 - 1433

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

इस्लाम में ज्ञान का महत्व

अल्लाह तआला ने मनुष्य को पैदा किया और उसे ज्ञान और जानकारी के उपकरणों से सुसज्जित किया और वे श्रवण (कान), दृष्टि और बुद्धि हैं, अल्लाह तआला का फरमान है:

﴿وَٱللَّهُ أَخۡرَجَكُم مِّنۢ بُطُونِ أُمَّهَٰتِكُمۡ لَا تَعۡلَمُونَ شَيۡـٔٗا وَجَعَلَ لَكُمُ ٱلسَّمۡعَ وَٱلۡأَبۡصَٰرَ وَٱلۡأَفۡـِٔدَةَ لَعَلَّكُمۡ تَشۡكُرُونَ ٧٨﴾

"और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये कि तुम शुक्रिया अदा कर सको।" (सूरतुन नह्ल : ७८)

इस्लाम ज्ञान का धर्म है, चुनाँचि क़ुरआन करीम की जो सर्व प्रथम आयत उतरी वह पढ़ने का आदेश देती है जो कि हर प्रकार के विज्ञान की कुंजी है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿ٱقۡرَأۡ بِٱسۡمِ رَبِّكَ ٱلَّذِي خَلَقَ ١ خَلَقَ ٱلۡإِنسَٰنَ مِنۡ عَلَقٍ ٢ ٱقۡرَأۡ وَرَبُّكَ ٱلۡأَكۡرَمُ ٣ ٱلَّذِي عَلَّمَ بِٱلۡقَلَمِ ٤ عَلَّمَ ٱلۡإِنسَٰنَ مَا لَمۡ يَعۡلَمۡ ٥﴾

"अपने रब का नाम लेकर पढ़ जिस ने पैदा किया। जिस ने मनुष्य को खून के लोथड़े से पैदा किया। तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला (दानशील) है। जिस ने क़लम के द्वारा ज्ञान सिखाया। जिस ने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था।" (सूरतुल अलक़ : १ - ५)

इस्लाम में ज्ञान, अमल करने से पहले है। अत: ज्ञान के बिना कोई अमल नहीं, अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फरमाया :

﴿فَٱعۡلَمۡ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا ٱللَّهُ وَٱسۡتَغۡفِرۡ لِذَنۢبِكَ وَلِلۡمُؤۡمِنِينَ وَٱلۡمُؤۡمِنَٰتِۗ ... ١٩﴾

"तो (हे नबी!), आप जान लें (यक़ीन कर लें) कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा पूज्य (माबूद) नहीं और अपने पापों की माफी मांगा करें और ईमान वाले मर्दों और ईमान वाली औरतों के लिए भी (क्षमा याचना करते रहें)।" (सूरत मुहम्मद : १९)

अल्लाह तआला ने प्रत्येक मुसलमान को बिना ज्ञान के बात कहने पर चेतावनी दी है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फरमाया :

﴿وَلَا تَقۡفُ مَا لَيۡسَ لَكَ بِهِۦ عِلۡمٌۚ إِنَّ ٱلسَّمۡعَ وَٱلۡبَصَرَ وَٱلۡفُؤَادَ كُلُّ أُوْلَٰٓئِكَ كَانَ عَنۡهُ مَسۡـُٔولٗا ٣٦﴾

"और जिस बात की तुझे खबर ही न हो, उस के पीछे मत पड़, क्योंकि कान और आँख और दिल, इन में से हर एक से पूछताछ की जाने वाली है।" (सूरतुल इस्रा : ३६)

तथा ज्ञान और ज्ञानियों (विद्वानों) के स्थान और प्रतिष्ठा का चर्चा करते हुए अल्लाह तआला ने ज्ञानियों को अपनी वह्दानियत

(एकता) पर गवाह बनाया है, अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने फरमाया :

﴿شَهِدَ ٱللَّهُ أَنَّهُۥ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَٱلۡمَلَٰٓئِكَةُ وَأُوْلُواْ ٱلۡعِلۡمِ قَآئِمَۢا بِٱلۡقِسۡطِۚ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ٱلۡعَزِيزُ ٱلۡحَكِيمُ ١٨﴾

"अल्लाह तआला और फरिश्ते और ज्ञानी इस बात की गवाही देते हैं कि अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई उपास्य (सच्चा माबूद) नहीं और वह न्याय को स्थापित करने वाला है, उस सर्वशक्तिमान और सर्वबुद्धिमान के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं।" (सूरत आल इम्रान : १८)

अल्लाह तआला का ज्ञान और उस का भय, उस की आयतों और उस की सृष्टि (मख्लूक़ात) की जानकारी से सम्पूर्ण होता है, और ज्ञानी लोग ही इस की जानकारी रखते हैं, इसीलिए अल्लाह तआला ने अपने इस कथन के द्वारा उन की प्रशंसा की है :

﴿إِنَّمَا يَخۡشَى ٱللَّهَ مِنۡ عِبَادِهِ ٱلۡعُلَمَٰٓؤُاْۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ٨﴾

"अल्लाह से उस के वही बन्दे डरते हैं जो ज्ञान रखते हैं।" (सूरत फातिर : २८)

इस्लाम में ज्ञानियों का एक माननीय स्थान है जो लोक और परलोक में उन के सिवाय अन्य सभी लोगों से सर्वोच्च है, अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿يَرْفَعِ ٱللَّهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنكُمْ وَٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ دَرَجَٰتٍ ۚ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾﴾

"अल्लाह तआला तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं और जो ज्ञान दिये गये हैं (उन के) पद को ऊँचा करता है।" (सूरतुल मुजादला : ११)

ज्ञान के महत्व के कारण अल्लाह तआला ने अपने पैगंबर को आदेश दिया है कि वह अधिक ज्ञान तलब करें, चुनाँचि अल्लाह ने फरमाया :

﴿وَقُل رَّبِّ زِدْنِى عِلْمًا ﴿١١٤﴾﴾

"और यह कह कि : रब ! मेरा ज्ञान बढ़ा।" (सूरत ताहा : ११४)

तथा अल्लाह तआला ने ज्ञानियों और विद्वानों की अपने इस फरमान के द्वारा प्रशंसा की है :

﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِى ٱلَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُو۟لُوا۟ ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿٩﴾﴾

"बताओ तो आलिम (ज्ञान रखने वाले) और जाहिल (जो ज्ञान नहीं रखते) क्या बराबर हो सकते हैं ? नि:सन्देह नसीहत वही हासिल करते हैं जो बुद्धिमान (अक़लमन्द) हों।" (सूरतुज़्ज़ुमर : ९)

ज्ञान रखने वाले, लोगों में सब से अधिक शीघ्रता से हक़ को पहचानने वाले और उस पर विश्वास रखने वाले होते हैं :

﴿وَلِيَعْلَمَ ٱلَّذِينَ أُوتُوا۟ ٱلْعِلْمَ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوا۟ بِهِۦ فَتُخْبِتَ لَهُۥ قُلُوبُهُمْ ۗ ... ﴿٥٤﴾﴾

"और इसलिए भी कि जिन्हें ज्ञान दिया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आप के रब की तरफ से पूरा सच है, फिर वे उस पर ईमान लायें और उन के दिल उस की तरफ झुक जायें।" (सूरतुल हज्ज : ५४)

इस्लाम ज्ञान प्राप्त करने की मांग करता है, तथा पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज्ञान प्राप्त करना हर मुसलमान पर अनिवार्य कर दिया है और एक ज्ञानी की प्रतिष्ठा एक इबादत गुज़ार पर ऐसे ही बयान किया है जिस तरह कि चन्द्रमा को अन्य ग्रहों पर प्रतिष्ठा प्राप्त है, और यह कि ज्ञानी लोग ईश्दूतों (पैगंबरों) के वारिस हैं और पैगंबरों ने दीनार और दिरहम (सोना और चांदी) वरासत में नहीं छोड़ा है, बल्कि उन्हों ने ज्ञान को वरासत में छोड़ा है, अत: जिस ने उसे प्राप्त किया उस ने भरपूर हिस्सा लिया। तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचना दी है कि ज्ञान अर्जित करना स्वर्ग में पहुँचने का रास्ता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया :

"जो आदमी ज्ञान की खोज में कोई रास्ता चलता है तो अल्लाह तआला उस के फलस्वरूप उस के लिए जन्नत का रास्ता आसान कर देता है।" (सहीह बुखारी, किताबुल इल्म /१०)

इस्लाम सभी लाभदायक और उपयोगी विज्ञान को सीखने की मांग करता है, और विज्ञान की कई श्रेणियाँ हैं, उन में सब से श्रेष्ठ

शरीअत (धर्म शास्त्र) का ज्ञान है, फिर चिकित्सा विज्ञान है फिर अन्य शेष विज्ञान हैं।

सभी विज्ञानों में सब से अच्छा इस्लामी विज्ञान हैं जिन के द्वारा इंसान अपने रब, अपने ईश्दूत और अपने धर्म की जानकारी प्राप्त करता है, और इन्हीं विज्ञानों के द्वारा अल्लाह तआला ने अपने पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्मानित किया और उन्हें इन की शिक्षा दी ताकि आप लोगों को इन की शिक्षा दें :

﴿لَقَدْ مَنَّ ٱللَّهُ عَلَى ٱلْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا۟ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتِهِۦ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا۟ مِن قَبْلُ لَفِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾﴾

"अल्लाह तआला नें मोमिनों पर बड़ा उपकार किया है कि उन्हीं में से उन के मध्य एक पैग़ंबर भेजा जो उन पर अल्लाह तआला की आयतें तिलावत करता, उन्हें पाक करता और उन्हें किताब और हिक्मत की शिक्षा देता है, अगरचे वो इस से पहले स्पष्ट पथ-भ्रष्टता में थे।" (सूरत आल-इम्रान: १६४)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह तआला जिस के साथ भलाई चाहता है उसे दीन की समझ प्रदान कर देता है।" (सहीह बुखारी / ६९)

तथा कुरआन के सीखने और सिखाने पर ध्यान देने के बारे में पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं : "तुम में सब से अच्छा वह आदमी है जो क़ुर्आन की शिक्षा प्राप्त करे और उस की शिक्षा दे।" (सहीह बुखारी / ४६३९)

तथा उस ज्ञान में कोई भलाई नहीं जिस की पुष्टि और सत्यापन अमल (कार्य) न करता हो, और न तो ऐसी बातों में कोई अच्छाई है जिन की पुष्टि करनी से न होती हो :

﴿ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفۡعَلُونَ ۝٢ كَبُرَ مَقۡتًا عِندَ ٱللَّهِ أَن تَقُولُواْ مَا لَا تَفۡعَلُونَ ۝٣ ﴾

"हे ईमान वालो, तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं ? तुम जो करते नहीं, उस का कहना अल्लाह तआला को नापसन्द है।" (सूरतुस्सफ : २-३)

उम्मत को हर समय और स्थान पर विद्वानों की आवश्यकता होती है, जो उम्मत बिना ज्ञान और ज्ञानियों (विद्वानों) के होती है वह भ्रमों में जीवन बिताती है और अंधेरे में भटकती है। जब इंसान अल्लाह तआला की शरीअत (धर्म शास्त्र) का ज्ञान प्राप्त कर ले, और इस ज्ञान को छुपाये, और उम्मत को इस से वंचित रखे तो अल्लाह तआला क़ियामत के दिन उसे आग की लगाम पहनाये गा, और वह धिक्कार का पात्र होगा, सिवाय उस के जो इस से पश्चाताप कर ले, जैसाकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फरमान है :

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَكۡتُمُونَ مَآ أَنزَلۡنَا مِنَ ٱلۡبَيِّنَٰتِ وَٱلۡهُدَىٰ مِنۢ بَعۡدِ مَا بَيَّنَّٰهُ لِلنَّاسِ فِي ٱلۡكِتَٰبِ أُوْلَٰٓئِكَ يَلۡعَنُهُمُ ٱللَّهُ وَيَلۡعَنُهُمُ ٱللَّٰعِنُونَ ۝١٥٩ إِلَّا ٱلَّذِينَ تَابُواْ وَأَصۡلَحُواْ وَبَيَّنُواْ فَأُوْلَٰٓئِكَ أَتُوبُ عَلَيۡهِمۡ وَأَنَا ٱلتَّوَّابُ ٱلرَّحِيمُ ۝١٦٠﴾

"जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों और निर्देशों (हिदायत) को छुपाते हैं इस के बावजूद कि हम उसे अपनी किताब (पवित्र क़ुरआन) में लोगों के लिए बयान कर चुके हैं, उन लोगों पर अल्लाह की और सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है। लेकिन वे

लोग जो तौबा कर लें और सुधार कर लें और बयान करें तो मैं उन की तौबा स्वीकार कर लेता हूँ, और मैं बहुत तौबा क़बूल करने वाला और दया करने वाला हूँ।" (सूरतुल बक़रा : १५९ - १६०)

ज्ञानी (विद्वान) के लिए बहुत बड़ा पुण्य (पुरस्कार) है, और भलाई की तरफ मार्गदर्शन करने वाला उसे करने वाले की तरह है, और जब विद्वान मर जाता है तो अल्लाह के पास उस का अज्र (बदला, प्रतिफल) उस की मौत के कारण समाप्त नहीं होता है, बल्कि वह उस के लिए उस समय तक जारी रहता है जब तक लोग उस के ज्ञान से लाभ उठाते रहते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जब मनुष्य मर जाता है तो उस के अमल का सिलसिला समाप्त हो जाता है सिवाय तीन चीज़ों केः जारी रहने वाला सद्क़ा व खैरात, ऐसा ज्ञान जिस से लाभ उठाया जाता रहे और नेक औलाद जो उस के लिए दुआ करती रहे।" (सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : १६३१)

जब विद्वान अपने ज्ञान को लोगों के बीच फैलाता और उस का प्रचार करता है तो उसे उस पर चलने वालों के प्रतिफल के बराबर

अज्र व सवाब मिलता है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "जिसने किसी नेकी की तरफ दूसरों को बुलाया तो उस के लिए उस की पैरवी करने वालों के समान अज्र है, जबकि उन के अज्र में कोई कमी नहीं होगी, और जिस ने किसी गुमराही की ओर दावत दी तो उसे उस की पैरवी करने वालों के समान गुनाह मिले गा जबकि उनके गुनाहों में कोई कमी न होगी।" (सहीह मुसिलम हदीस संख्या : २६७४)

धर्म की समझ, भलाई और नेकी के कार्यों में से सब से श्रेष्ठ कार्य है जिस पर एक मुसलमान प्रतिष्ठा और गौरव का अनुभव करता है, जैसाकि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई चाहता है उसे दीन की समझ प्रदान कर देता है।" (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम)

क़ुरआन पढ़ना और उस को सीखना और सिखाना सर्व श्रेष्ठ कामों में से है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : "केवल दो चीज़ों में हसद (रश्क करना) पसन्दीदा है : एक वह आदमी जिसे अल्लाह तआला ने क़ुरआन अता फरमाया है चुनाँचि

वह दिन और रात के हिस्सों में उस पर अमल करता है, तथा एक वह आदमी जिसे अल्लाह तआला ने धन दे रखा है जिस से वह दिन और रात के हिस्सों में खर्च करता है।" (सहीह बुखारी हदीस संख्या : ७३, सहीह मुस्लिम हदीस संख्या : ८१५)

शैख मुहम्मद बिन इब्राहीम अत्तुवैजरी की किताब "उसूलुद्दीनिल इस्लामी" (इस्लाम धर्म के मूल सिद्धान्त) से उद्धृत